प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

नागरिकशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य

नागरिकशास्त्र के तीन लक्ष्य निम्न-लिखित हैं—

1. नागरिकशास्त्र के शिक्षण द्वारा छात्रों में उनके निकटवर्ती पड़ोस के लिए रुचि जाग्रत की जानी चाहिए और धीरे-धीरे इस रुचि को गाँव, नगर, जिला, प्रदेश तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए विस्तृत बनाया जाना चाहिए।
2. इसके द्वारा छात्रों को संस्थाओं के विकास, सभ्यता की उन्नति, वर्तमान दशाओं के कारणों तथा भविष्य की

Date
Page

झलक का ज्ञान दिया जाये।

3. नागरिकशास्त्र शिक्षण द्वारा छात्रों में समाज की सेवा करने की इच्छा तथा उसके प्रति शक्ति की भावना रखने की प्रेरणा उत्पन्न की जाये।

ई. एम ह्वाइट ने लिखा है, "किसी विषय में वास्तविक रुचि विकसित करने के लिए विषय को वास्तविक या सजीव बनाना आवश्यक है। विषय को वास्तविक बनाने के लिए बालकों के वास्तविक जीवन, उनके घरों एवं सड़कों की प्रतिदिन की घटनाओं आदि का अध्ययन किया जाये जिससे बालक जीवन तथा नागरिकशास्त्र के पाठों के वास्तविक सम्बन्ध को समझ सके।"

अतः नागरिकशास्त्र के उपयुक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नागरिकशास्त्र का वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है।

एडम्स वेस्ले ने नागरिकशास्त्र-शिक्षण के निम्नलिखित लक्ष्य प्रस्तुत किये हैं—

1. सरकार की आवश्यकता को समझने की शक्ति प्रदान करना।
2. सरकार के ढाँचे का ज्ञान प्रदान करना।
3. राजनैतिक दलों तथा उनके कार्यों का ज्ञान प्रदान करना।
4. राष्ट्रों के सहयोग के महत्व का ज्ञान देना।
5. नागरिक के कर्त्तव्यों तथा अधिकारों का ज्ञान करना

6. प्रजातंत्र के लिए इष्ट विशेषता उत्पन्न करना।

प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि नि० शा० का मुख्य लक्ष्य समाज में उपयोगी सदस्यों का निर्माण करना है उपयोगी का तात्पर्य यह होना चाहिए कि ये सदस्य समाज के हित के लिए कार्य करें इन सदस्यों का उदार दृष्टिकोण हो तथा दूसरों के विचारों के प्रति सहिष्णुता की नीति को अपनायें। इसके अतिरिक्त वे सहानुभूति, भ्रातृत्व, प्रेम, नम्रता आदि गुणों से विभूषित हो। इसके साथ ही उनमें दूसरे व्यक्तियों के हित के लिए अपनी स्वार्थपरता को त्यागने की क्षमता हो। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वे राष्ट्र तथा अन्य व्यक्तियों के लिए अपनी इच्छाओं को न्यौछावर करने के लिए तैयार रहें।

25.9.22

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

स्कूल स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य [Aims of Civics Teaching of School level]:

प्राथमिक स्तर ⟷ माध्यमिक स्तर
उच्चतर माध्यमिक स्तर

1. प्राथमिक स्तर :— प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1-5 आती है। इस स्तर के छात्र कहानी कहना तथा सुनना अधिक पसन्द करते है। इसके अतिरिक्त उनकी आयु ऐसी होती है कि उनको सरलता से प्रभावित किया जा सकता है।

(i) छात्रों में चारित्रिक गुणों का विकास करना। इसके लिए विभिन्न काल्पनिक एवं पारम्परिक पात्रों की कहानियों का सहारा लिया जा सकता है।
(ii) छात्रों के विभिन्न उत्तम आदतों का निर्माण करना।
(iii) छात्रों में देश प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना का विकास करना।
(iv) नागरिकशास्त्र में अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए पृष्ठभूमि तैयार करना।
(v) छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास करना।
(vi) स्थानीय संस्थाओं एवं नेताओं से अवगत कराना।
(vii) राष्ट्रीय एकता के प्रतीकों के प्रति सम्मान तथा अपनत्व की भावना का विकास

2. माध्यमिक स्तर :— इस स्तर के छात्र किशोरावस्था के निकट पहुँचने लगते है। उनकी मानसिक शक्तियों का भी कुछ सीमा तक विकास हो जाता है। वास्तविकता में अधिक आस्था रखते है। अतः इस स्तर पर नागरिकशास्त्र की शिक्षा निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर दी जा सकती है—

(i) नागरिक गुणों के विकास के लिए व्यावहारिक पर बल देना।
(ii) स्थानीय शासन से परिचित कराना।
(iii) शासन के स्वरूप से अवगत कराना।
(iv) वैज्ञानिक दृष्टिकोण के निर्माण के लिए कार्य करना।
(v) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना
(vi) देश की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक समस्याओं की जानकारी प्रदान करना।
(vii) छात्रों की सामाजिक शक्तियों का विकास करना।
(viii) चारित्रिक गुणों एवं अनुशासित जीवन के अंगों को दृढ़ बनाना।
(ix) राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्याओं से अवगत कराना।
(x) छात्रों को आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के सरल उदाहरणों द्वारा अवगत कराना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

25.6.20